DURGA MAHAVIDYALAYA, RAIPUR CHHATTISGARH

Aysha Parveen
Assistant professor
Department of Economics

Topic –The Concept Of Surplus
(उपभोक्ता की बचत की विचार)

Class – B. A. 3rd semester

उपभोक्ता की बचत का अर्थ

- उपभोक्ता की बचत का विचार अर्थशास्त्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस विचार को रखने का श्रेय फ्रांसीसी अर्थशास्त्रीय प्रोफेसर ड्यूटी को प्राप्त है उन्होंने सन 1844 ई. में स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास किया किंतु उपभोक्ता की बचत के विचार का वैज्ञानिक तथा कर्मबद्ध अध्ययन डॉक्टर मार्शल ने किया।
- उपभोक्ता की बचत हमारे दैनिक जीवन में खरीदी जाने वाली वस्तुओं से प्राप्त होता है यह विचार उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है उपभोक्ता जैसे-जैसे बाजार में किसी वस्तु की अधिकाधिक   इकाइयों को खरीदा जाता है उसकी सीमांत उपयोगिता क्रमश: कम होती जाती है परंतु एक व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु का क्रय या खरीदारी इस सीमा तक की जाती है जहां की वस्तु की सीमांत उपयोगिता उसे वस्तु की कीमत के बराबर आ जाती है इस प्रकार सीमांत उपयोगिता के पूर्व की इकाइयों से एक प्रकार का अतिरेक प्राप्त होता है इसे ही अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत के विचार के नाम से पुकारा जाता है

परिभाषाएं

- **डॉ मार्शल के अनुसार** किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने के लिए तत्पर रहता है तथा जो कीमत वह वास्तव में देता है उन दोनों का अंतर ही अतिरिक्त संतोष का आर्थिक माप है इसको ही उपभोक्ता की बचत कहा जाता है
- **प्रोफेसर टाजिंग** के शब्दों में समस्त तुष्टि गुण और समस्त विनियम कीमत को मापने वाली राशियों का अंतर ही उपभोक्ता की बचत है

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो कीमत हम देने को तैयार होते हैं तथा जो वास्तव में देते हैं इसके अंतर को उपभोक्ता की बचत कहा जाता है

उपभोक्ता की बचत का उदाहरण:-

वस्तु की इकाइयाँ	उपयोगिता मूल्य	विनिमय मूल्य	उपभोक्ता की बचत
1	100	20	100 – 20 = 80
2	80	20	80 – 20 = 60
3	60	20	60 – 20 = 40
4	40	20	40 – 20 = 20
5	20	20	20 – 20 = 0
योग	300	100	300 – 100 = 200

तालिका का ग्राफ द्वारा प्रस्तुतीकरण:-

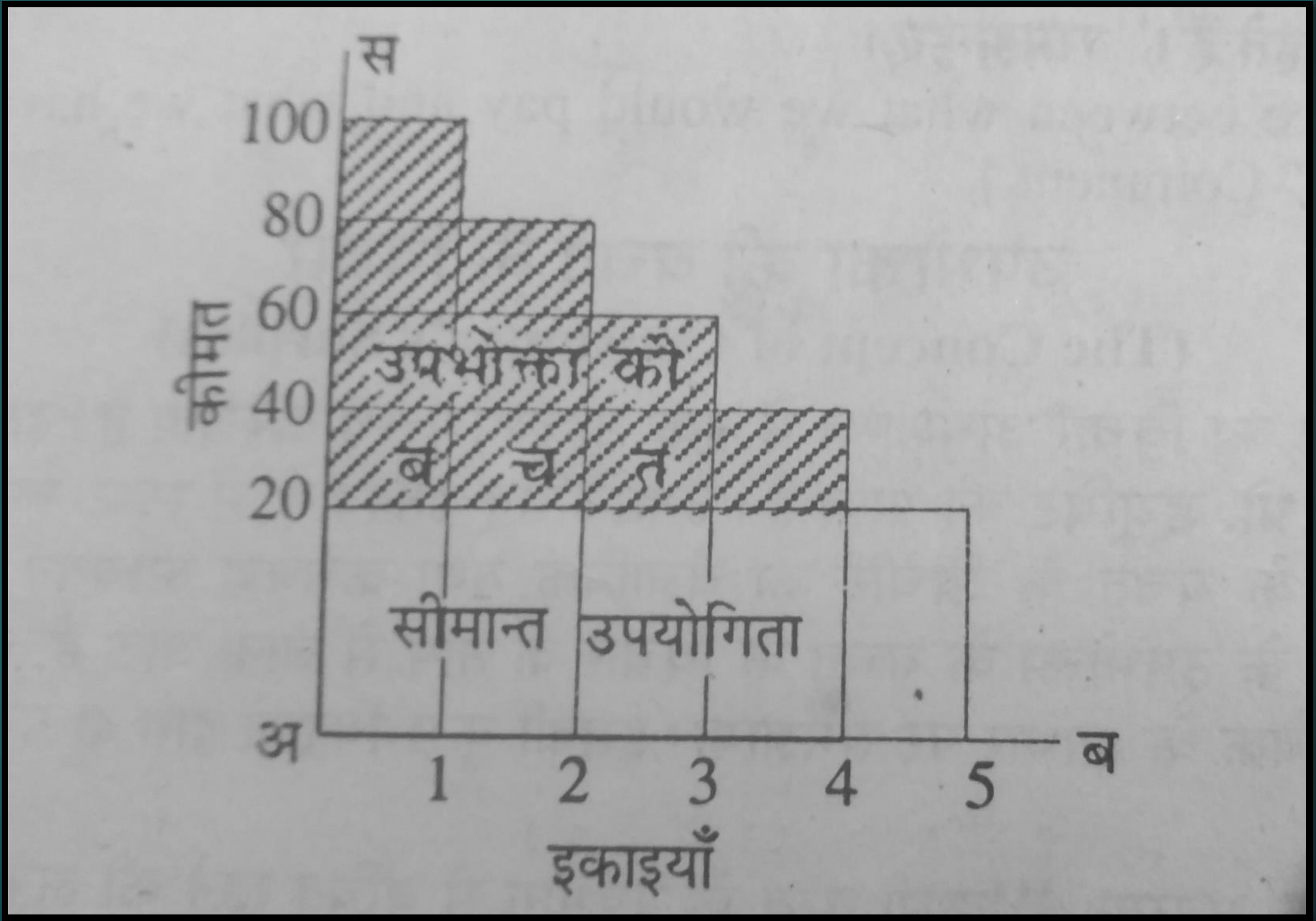

ग्राफ का विश्लेषण:-

उपर्युक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि उपभोक्ता पांच इकाइयों के लिए 300 इकाइयां देने को तैयार है किंतु उसे यह पांच इकाइयां केवल 100 में ही प्राप्त हो जाती है इस प्रकार उपभोक्ता को 200 के बराबर अतिरेक प्राप्त होता है इसे ही अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत कहते है।

चित्र में अ ब रेखा पर वस्तु की इकाइयों को तथा अ स रेखा पर उसे प्राप्त होने वाली उपयोगिता को दर्शाया गया है चित्र को देखने से पता चलता है कि उपभोक्ता पांच इकाइयों के लिए 300 देने को तैयार है किंतु जब वह वास्तव में इन पांच इकाइयों को क्रय करता है तो उसे केवल 100 के बराबर की कीमत देनी पड़ती है इस प्रकार उसे 200 के बराबर बचत होती है इसे ही अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत कहते हैं।

उपभोक्ता की बचत =कुल उपयोगिता- (कीमत × वस्तु की इकाई)

= कुल उपयोगिता –(सीमांत उपयोगिता - वस्तु की इकाई)

=300 –(20×5)

=300 – 100

=200

मापने की कठिनाइयां:-

- उपयोगिता अमापनीय
- द्रव्य की सीमांत उपयोगिता स्थिर नहीं
- आय तथा खर्चे में अंतर
- अपूर्ण मांग तालिका
- अनिवार्यताओं से असीमित बचत
- पूरक वस्तुओं में असत्य
- व्यर्थ तथा निरर्थक

निष्कर्ष:-

- उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी उपभोक्ता की बचत के विचार का अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान पाया जाता है इस बारे में प्रोफेसर रॉबर्टसन का कथन सत्य प्रतीत होता है कि यदि हम इस धारणा से बहुत आशा न करें तो भी यह बौद्धिक रूप से महत्वपूर्ण और व्यापारिक कार्यों में मार्गदर्शन व लाभदायक है इस अवधारणा का सिद्धांतिक तथा व्यवहारिक दोनों प्रकार का महत्व है।

Thank you